गोवा विश्वविद्‌याल

शणैं गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण (HIN 528)

सर्वेक्षण रिर्पोट

नाम: प्रतिमा बिस्वास

कक्षा: एम ए 1

12/20

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

अनुक्रमणिका

सं. क्र	विषय
1.	प्रस्तावना
2.	सर्वेक्षण क्या है ?
3	नवाशी गाँव का परिचय
4.	हिंदी भाषा का ज्ञान
5.	साक्षरता दर
6.	व्यावसाय एवं आर्थिक स्थिति
7.	लोकसंस्कृति एवं परंपराएं
8.	गाँव के लोगों की अपेक्षाएं
9.	निष्कर्ष

नावरी

प्रस्तावना

हमारे पाठ्यक्रम के अंतर्गत सामाजिक सर्वेक्षण यह विषय रखा गया है। इस सर्वेक्षण के लिए हमने 'नवशी' नामक गांव का चयन किया है। इस सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त किए गए अनुभव मूल्यवान है। आज हमारे व्यस्त जीवन में इस विषय के माध्यम से ही हमें दूसरों के जीवन में क्या चल रहा है इसका ज्ञात होता है। उनके अचार - विचार उनकी संस्कृति को जानने का मौका मिला। यह गांव गोवा विश्वविद्यालय द्वारा दत्तक लिया हुआ है।

इस विषय द्वारा हमें यह मौका मिला कि हम इस प्रतिदिन की दिनचर्या से बाहर जाकर लोगों से संवाद साध सके। अनजान लोगों के मध्य जाकर उनकी जानकारी प्राप्त करना आसान नहीं था। परंतु इस सर्वेक्षण के माध्यम से लोगों के घर-घर जाकर उनसे बात करके पता चला कि हर एक व्यक्ति के जीवन में उनका व्यक्तिगत संघर्ष होता है और जो हमारे जीवन के छोटे-छोटे घटनाओं से भी बड़ी होती है।

पहले तो मेरे मन में एक डर सा था कि लोगों से किस प्रकार बातचीत शुरू करें और हम जो प्रश्न पूछेंगे वह उनको कितना सही लगेगा यह बात मेरे मन में चल रही थी। पहले घर में हमने प्रवेश किया और अपना परिचय उनको दिया। फिर तैयार की गई प्रश्नावली से उनको हमने प्रश्न पूछा और इस प्रकार मन में एक आत्मविश्वास जागृत हुआ

कि हां हम आगे का सर्वेक्षण सफलता पूर्ण कर सकते है। इस गांव के लोगों से बातचीत करके इस गांव के इतिहास एवं संस्कृति के बारे में जानकारी मिली। नावशी गांव के लोगों के सहयोग से हमारे सर्वेक्षण का कार्य सफल रहा।

सर्वेक्षण क्या है?

सर्वेक्षण शोध मुख्यतः विचारों, मतों और भावनाओं के आकलन को कहा जाता है। यह सीमित एवं विशिष्ट हो सकता है एवं वैश्विक, व्यापक भी हो सकता है। मानव विषयों के अनुसंधान में, एक सर्वेक्षण लोगों के एक विशेष समूह से विशिष्ट डेटा निकालने के उद्देश्य से प्रश्नों की एक सूची है। सर्वेक्षण फोन, मेल, इंटरनेट के माध्यम से और कभी-कभी व्यस्त सड़क के कोनों या मॉल्स में आमने-सामने किए जा सकते हैं। सर्वेक्षण का उपयोग सामाजिक अनुसंधान और जनसांख्यिकी जैसे क्षेत्रों में ज्ञान बढ़ाने के लिए किया जाता है।

नवशि गांव का परिचय

नवशि समुद्र किनारे बसा एक सुंदर गांव है। पहली बार जब हम इस गांव में गए तो वहां की प्रकृतिक अनुभूतियों से मुझे बहुत आनंद मिला। इस गांव की जनसंख्या 400 से 500 के आसपास है। इस गांव की एक बात अटपटी थी कि लोग तो सारे हिंदू थे परंतु उनके नाम क्रिश्चियन के जैसे थे। इसके पीछे भी एक कारण है जब पुर्तगाली राज चल रहा था तब धर्म परिवर्तन हुआ या नाम बदले गए उसके अनुरूप उनके नाम

वैसे ही रह गए। इस गांव के ज्यादातर लोग मछुआरे हैं और उनका व्यवसाय भी इसी में है। इस गांव में हर तरह का उत्सव मनाया जाता है जैसे जागोर, धालो, शिगमो, चवथ आदि। जब हम इस गांव में सर्वेक्षण के लिए जा रहे थे तब मेरे मन में एक धारणा थी कि गांव के रास्ते कच्ची होगी, घर कच्चे होंगे और माहौल भी ग्रामीण होगा। परंतु इन सब से विपरीत था पक्के रास्ते, दो मंजिला घर एवं सारी सुविधाएं उपलब्ध थी।

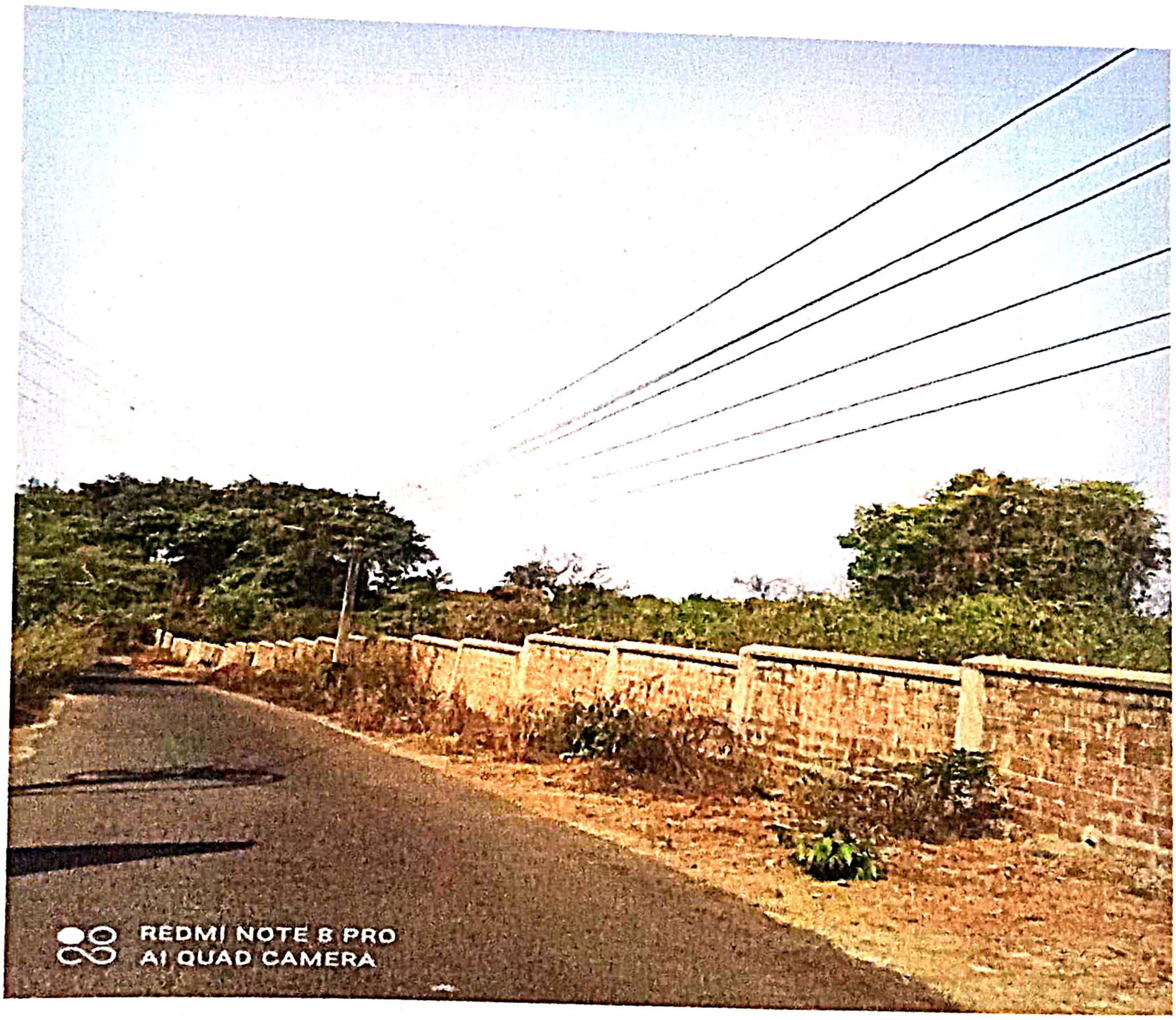

हमारे सर्वेक्षण के प्रथम साक्षात्कारदाता थे सगुन काणकोणकर जी जिन्होंने हमें उसे गांव के बारे में बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारियां दी। जिनके माध्यम से हमें यह जानकारी प्राप्त हुई कि इस गांव की जो जमीन है वह आलदिया (Aldie's) की है जो एक नामी होटल है। जहां पर अभी इस गांव के लोग निवासी हैं। उन्होंने हमें यह भी बताया कि ज्यादातर लोग मच्छी का व्यापार करते हैं। वहां समुद्र किनारे एक पत्थर है जिसे वहां के लोग **पूजते** है और उसे गांव में बहुत माना जाता है।

हमारे दूसरे साक्षात्कारदाता थे नरेश काणकोणकार जिन्होंने 2006 में वकालत की पढ़ाई पूरी की थी। अभी वह एक सरकारी कार्यकर्ता है। उनके माध्यम से हमें उस गांव की लोक संस्कृति एवं गांव के वातावरण के बारे में पता चला। उन्होंने हमें यह बताया कि पहले जैसे इस गांव में बात नहीं थी। जब वे छोटे थे अपने दोस्तों के साथ जंगलों में फल तोड़ने जाते थे, विभिन्न प्रकार के खेल खेलते थे, जाल बिछाकर मछलियां पकड़ने जाते थे उस प्रकार की बात आज में नहीं है।

हिंदी भाषा का ज्ञान:-

इस गांव के लोगों को हिंदी भाषा का ज्ञान थोड़ा बहुत है। कुछ लोग बोल या समझ सकते हैं तो कुछ लोग सिर्फ समझते है पर बोल नहीं पाते। आज कल हिंदी बोलना कोई बड़ी बात नहीं है लोग टीवी या मोबाइल के माध्यम से आसानी से सिख लेते हैं।

साक्षरता दर

अगर हम इस गांव के लोगों की साक्षरता की बात करे तो ज्यादा तर लोग शिक्षित हैं। गांव के सभी बच्चे स्कूल या कॉलेज जाते हैं। गांव के बच्चे थोड़ी दूर सांताक्रुज में पढ़ने जाते हैं। उस गांव में एक आंगनबाड़ी भी है। जो सुबह 8:30 से दोपहर के 12:30 बजे तक खुली रहती है। जहां पर 3 साल के बच्चे आते हैं। जहां सभी सरकारी सुविधा उपलब्ध है एवं प्रति 6 महीने बाद उनकी शारीरिक चिकित्सा की जाती है। यहां पर बच्चों को रोचक तरीके से पढ़ाया जाता है जैसे नृत्य, गायन या कविता सुनाकर। उसे आंगनबाड़ी के शिक्षिका का नाम मानसी गांवकर है। वैसे तो उन्हें कोई शिकायत नहीं है पर उनकी सिर्फ एक ही अपेक्षा हैं कि बच्चे कुछ ज्यादा संख्या से आया करें। फिलहाल तो गिनती के सिर्फ चार या पांच बच्चे ही उस आंगनवाड़ी में आते हैं।

नेटवर्क या यातायात की बात करें तो इस गांव के लोगों को इन दोनों चीजों की सुविधा है उनको कोई परेशानी नहीं होती है। हर व्यक्ति के घर में दो चक्की या बड़ी गाड़ी है। और वहां नेटवर्क की कोई समस्या नहीं है और सभी का इंटरनेट सही से चलता है। स्वच्छता की बात करें तो यह गांव बहुत साफ एवं स्वच्छ है। गांव के लोगों ने स्वच्छता का अच्छे से ध्यान रक्षा है।

व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति

इस गांव की व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति की बात करें तो ज्यादातर गांव वाले मछुआरे है। और इसी से उनका गुजर बसर होता है गांव में कुछ लोग सरकारी नौकरी भी करते हैं। इस गांव में एक छोटी सी दुकान है और कुछ सामान चाहिए तो लोग सांताक्रुज या बंबोलिम जाते है।

इस गांव के मछुआरों को एक बात का ही डर है मरीना बे प्रोजेक्ट के आते ही उनके आजीविका पर बात आ जाएगी। जब हम उन गांव वालों से बातचीत कर रहे थे तब उनके चेहरों के आव भाव से पता चल रहा था कि उनके लिए यह कितनी बड़ी बात है। गांव वाले इस मरीना पर प्रोजेक्ट के सख्त खिलाफ है और एकजुट होकर इस पर प्रतिबंध लगाना चाहते हैं। इस गांव के कुछ लोग अभी भी खेतों में काम करने जाते हैं उसे गांव में तो वैसे कोई खेत खलिहान नहीं है। पहले गांव के घरों में गाय, बछड़े, बकरियां होती थी परंतु अब नहीं है।

इस गांव के लोग जो मछली का जाल है वह खुद बुनते हैं और उससे मछली पकड़ने जाते हैं। गांव के एक घर में जब हम गए वहां पर एक व्यक्ति ने हमें उस जाल को कैसे बुनते है वह खुद बुनकर दिखाया।

यह उस गांव की एक सब्जी विक्रेता है जिनका नाम रजनी मुर्गांवकर है। जो खेतों में काम करती है। जो सुबह 7:00 खेतों में जाती है और दोपहर के 12:00 बजे घर वापस आती है। वह फिर शाम को 3:00 सब्जी लेकर सांताक्रुज के मार्केट में बैठती है। इनके घर में कमाने वाला केवल यही है। उनके बातों से यह पता चला कि उन्होंने जीवन में बहुत संघर्षों का सामना किया है। और आज जितना भी उनके पास है सब उनकी मेहनत का फल है।

लोकसंस्कृति एवं परंपराएं

नवशि गांव की लोकसंस्कृति और परंपरा की बात करें तो इस गांव में कई तरह के उत्सव मनाए जाते हैं जो बहुत पहले से चली आ रही है। हर एक लोक उत्सव की अलग परंपराएं होती हैं। इस गांव में दो मंदिर है। एक मंदिर गांव के शुरुआत मे है और दूसरी आखिर मे है।

यह वह पहली मंदिर है जो गांव में प्रवेश करते ही देखने मिलती है। यह सतेरी देवी केरबाई की मंदिर है। इस मंदिर में ही सभी उत्सव मनाए जाते हैं।

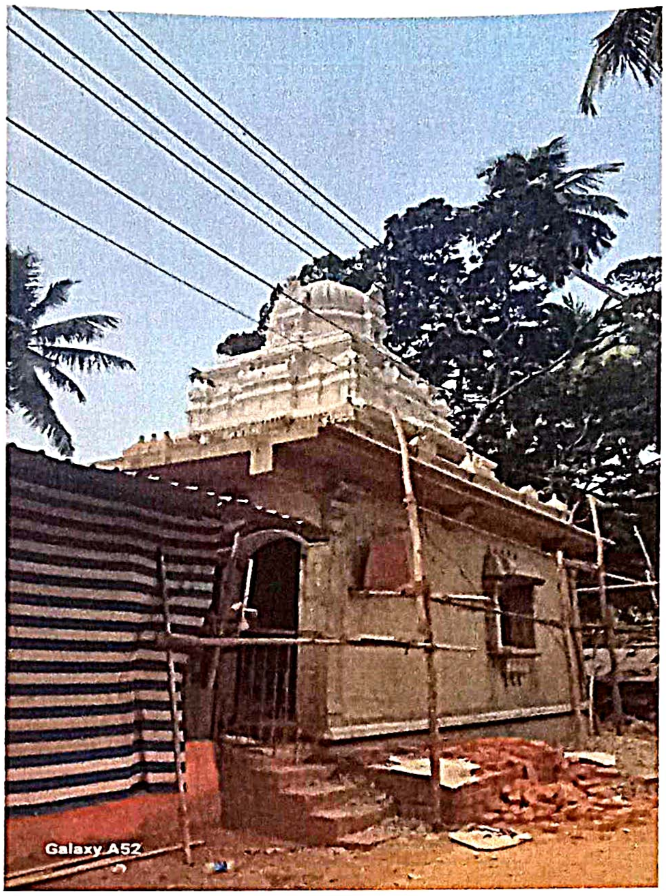

यह इस गांव का दूसरा मंदिर है जो गांव के आखिर में बन रहा है अभी तक पूरी तरह तैयार नहीं हुआ है। इसके पीछे भी एक कारण है इस गांव में दो 'जगोर' मनाए जाते है।

<u>जागोर</u>

सागर यह एक लोक उत्सव है जो गोवा के कुछ गांव में मनाया जाता है और यह उत्सव रात के समय मनाया जाता है। जागोर मई के पहले और दूसरे शनिवार को मनाया जाता है। जागोर रात के 12 से 2 के बीच खत्म हो जाती है। प्रसाद लेकर सभी अपने अपने घर चले जाते है।

पहले एक ही जागोर मनाया जाता था परंतु गांव वालों के आपसी मत-भेद के कारण अभी दो-दो जागोर मनाए जाते हैं। पहला जालोर मई महीने के पहले शनिवार को मनाया जाता है और दूसरा जागोर मई महीने के दूसरे शनिवार को मनाया जाता है। इस उत्सव में गांव वाले बड़ी आनंद से भाग लेते है। जागोर में ढोल, ताशे तुलसी के उधर घूमकर बजाया जाता है।

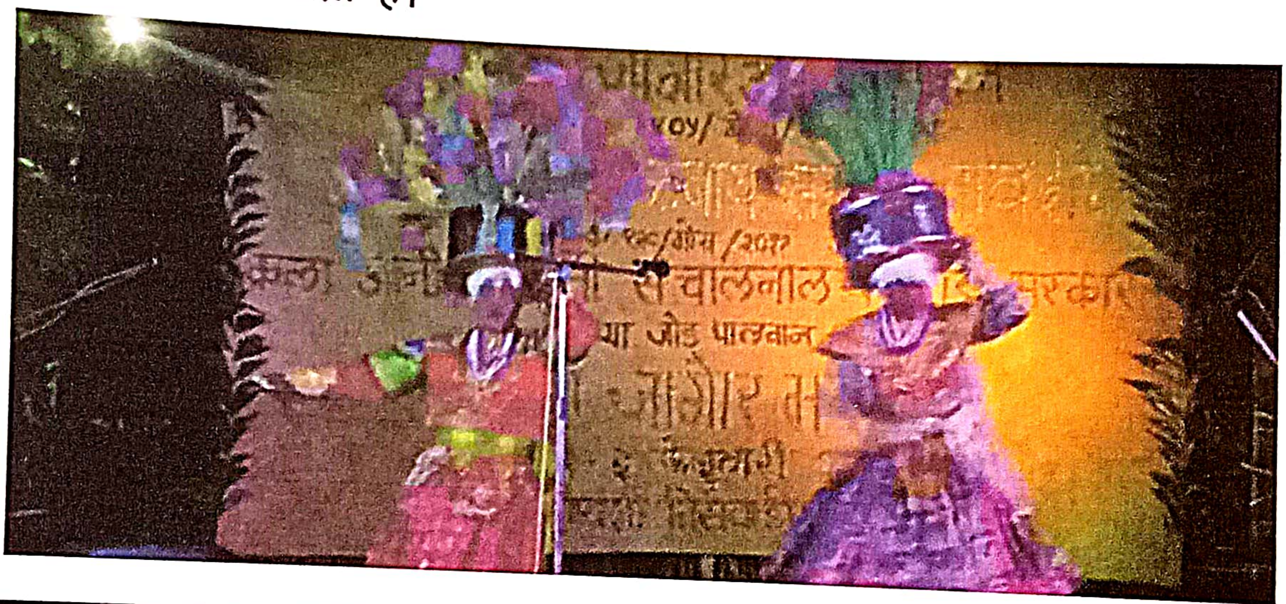

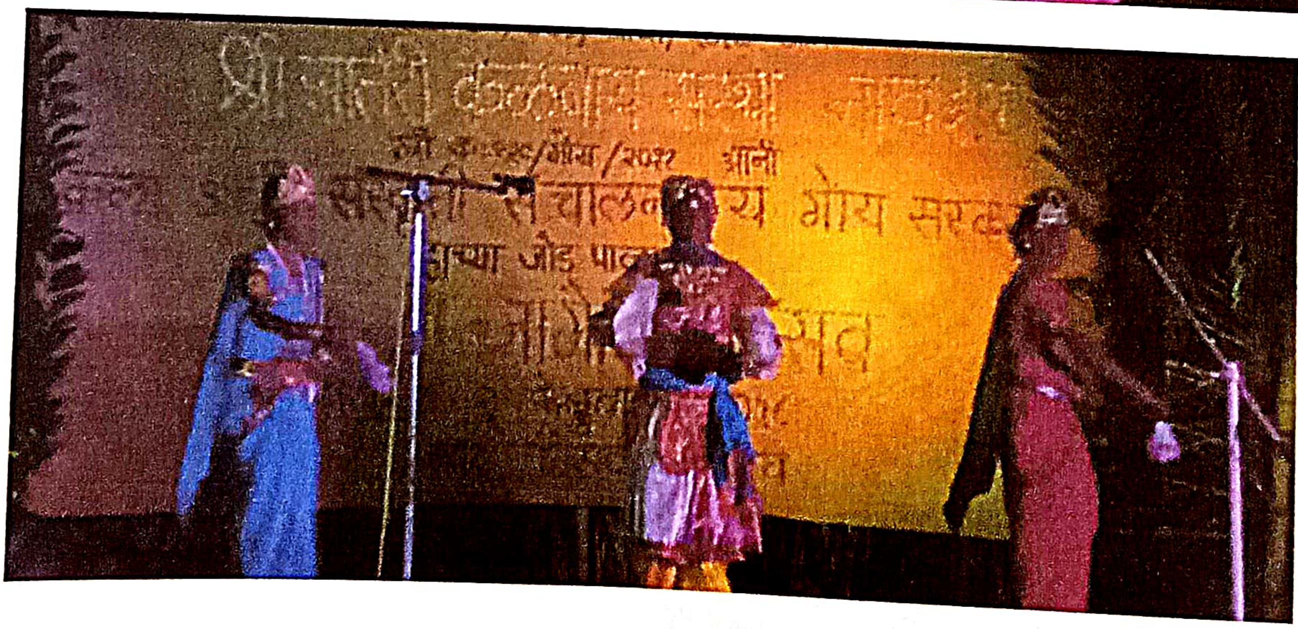

इस गांव में 5 दिन का जात्रा भी मनाया जाता है जो देवी केरबाय के मंदिर में मनाया जाता है। यह उत्सव बड़े ही जोरों शोरों से मनाया जाता है और गांव की सभी लोग हिस्सा लेते हैं। इस उत्सव के समय पारंपरिक पोशाक एवं लोकगीत गाकर नृत्य प्रस्तुत करते है। नाटक भी प्रस्तुत किया जाता है।

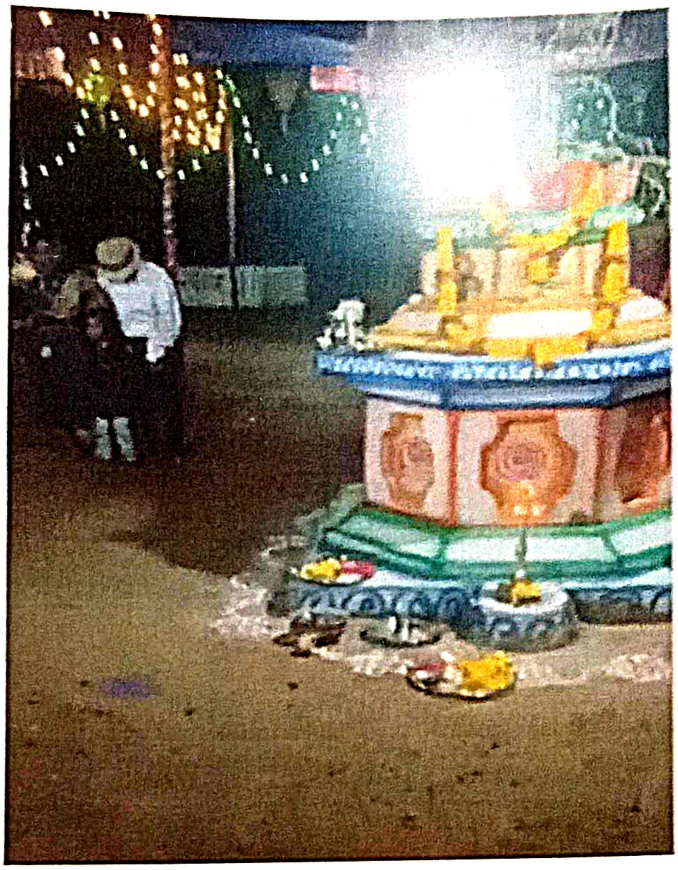

इस गांव मैं शिगमो उत्सव भी मनाया जाता है। जो रात के समय मनाया जाता है। गांव वाले मंदिर से पालकी निकाल कर घुमाते हैं।

इस गांव में धालो उत्सव मनाया जाता है। जो सिर्फ इस गांव के पुरुषों द्वारा खेला जाता है। इसमें स्त्रियां भाग नहीं ले सकती इसी बात के कारण इस गांव का धालो विख्यात है। इसके के पीछे कोई ठोस कारण तो नहीं पता पर यह पहले से खेला जाता है। जो जो तुलसी के सामने घर के आंगन में खेला जाता है।

अगर हम यहां की परंपरा की बात करें तो गांव भले ही गांव जैसा ना रहा हो परंतु वहां की मान्यताएं लोग संस्कृति एवं परंपराएं अभी भी जिंदा है। जो उनके पूर्व पुरुषों द्वारा शुरू किया गया था वह आज भी गांव के लोग सही ढंग से निभा रहे हैं। और आज की पीढ़ी भी इन सब चीजों में शामिल है भले ही वह कितना मॉडर्न बन जाए अपने संस्कृति और मिट्टी से जुड़े हुए हैं।

यह एक पहले के समय का रगड़ा है जहां पर मसाले कुंटे जाते थे।

गांव के लोगों की अपेक्षाएं

अगर हम गांव के लोगों के अपेक्षा की बात करें तो इनका मूल समस्या है मरीना बे जिसके कारण इनको बहुत तकलीफे आ सकती है। यहां तक की उन्हें अपने घर से भी बेघर होना पड़ सकता है। बस उनको सरकार से यही मदद चाहिए कि यह जो मरीना बे प्रोजेक्ट है वह रुक जाए और इनकी तकलीफों को समझा जाए। फिलहाल तो सारे गांव वाले एक झूठ होकर इस प्रोजेक्ट के खिलाफ है और आगे भी रहेंगे।

निष्कर्ष

निष्कर्ष हम यह कह सकते हैं यह गांव भले ही गांव जैसा न हो परंतु इस गांव में या इन गांवों के लोगों में अभी भी गांव के मान्यताओं के प्रति जुड़ाव है। इस गांव के युवा कितने ही पढ़े-लिखे एवं मॉडर्न क्यों न बन जाए पर वह अपने संस्कृति एवं परंपरा और गांव के मान्यताओं से जुड़े हैं। जहां तक मरीना बे की बात है गांव वाले तो इसके खिलाफ है ही परंतु अगर इस गांव के युवा पीढ़ी ने साथ में समर्थन किया तो वह अवश्य इसके खिलाफ कामयाब रहेंगे। क्योंकि आज के युवा ही अपने गांव या देश को आगे बढ़ाने में सहायता कर सकता है।